64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം തീയതി................ പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

रुलाई या पुकार ?

यह कैसा मौसम है? वसंत या शैत्य
क्या यह गर्म है या ठंड?
खुद को भी महसूस न कर सकते।
दिल बस ज़िंदा है...
माँ हूँ मैं, लेकिन अब सूखा
प्यार से नहीं, अमृत से।
अपने बच्चों को छू भी न सकती।
उनके पैरों में हमेशा जूता रहते हैं
तो माँ की गर्मी अन्य रहेगा,
और जब वह नंगे पैरों से आते हैं,
तब प्लास्टिक मेरी कपड़े बनते हैं।
मुस्कुराना अब याद नहीं क्योंकि,
बच्चे एक दूसरे से लड़ रहे हैं।

साँस भी न ले सकती
गला सूखा है लेकिन दिल नहीं
पुकारा - पानी के लिए
और मिली एक नदी - खून की।
कहाँ मेरी कपड़े, सब कहीं छोटे हैं
उसे छुपाना है, नहीं तो 'लोग क्या कहेंगे'?

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

ज़िंदगी 'रंग' खो रही है
हरियाली अब वही कपड़े जैसे।
इधर-उधर टुकड़ों में...
ज़िंदगी 'रंग' खो रही है
फिर भी बेटियों के शवदाह
लाल रंगीन कफ़न में।

सुबह हो या रात, रोशनी मुश्किल में है।
किसी खिड़की से मेरी ज़िंदगी में आने के लिए।
जब मैं रोशनी में माता हो, देवी हो,
वही रोशनी के अभाव में खेलने की चीज़।
प्यासी है तो बारिश नहीं, भूका है तो हवा भी
पर 'तूफ़ान' है जब बस एक दिया जलता है।

राष्ट्रनेता अंधा हो गया...
बस पैसे देख सकते हैं उन्हें
उन के लिए देश भी पैसे
जान और प्रकृति भी पैसे।
क्या वह यह न जानते?
कि सच्चाई अब 'मीठा' नहीं 'कड़वा' है?

सब डरते हैं सच से
क्योंकि उनका रंग लाल है
क्योंकि उनका गंध अम्ल का है
क्योंकि उनका आवाज़ रुलाई है
लेकिन वही 'सच' में प्यार है
जीवन और सम्मान है।

मर रही हूँ मैं।
मौत से डर नहीं मुझे
बस इस ज़िंदगी से है
जिस समाज़ मुझे बस मिट्टी मानता है, उससे
जिस बच्चे मेरी प्यार और त्याग न समझते, उससे
वे यह न जानती कि मैं माँ हूँ
सबसे प्यारी
और काली भी
सबसे ताकत वाली

खत्म हो गई मेरी आँसू
अब उनका रंग लाल हो गया।
पानी का प्यास बुझा न पाया

लेकिन अब भी प्यासी हूँ - प्यार के लिए

मैं मिट्टी हूँ
मुझसे जीवन उभलती है।
लेकिन इस पल ...
मेरी वह काली रूप भी ...

बात यह सब सिर्फ मेरी नहीं
मेरी उन बच्चों का भी
जो मरने के पहले मर जाता है
काव्य नहीं यह,
माँ की रुलाई है
माँ की पुकार है
मिट्टी की पुकार है!